अंबेडकरवाद का महत्वपूर्ण घटक है शिक्षा -प्रो. तुलसीराम
हिंदी विश्वविद्यालय में अंबेडकरवाद पर विशेष व्याख्यान का आयोजन

वर्धा दि. 12 मार्च 2011: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित 'डॉ. अंबेडकर अध्ययन केंद्र' की ओर से **'अंबेडकरवाद'** विषय पर आयोजित विशेष व्याख्यान में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के प्रोफेसर तुलसीराम ने कहा कि डॉ. अंबेडकर ने शिक्षा के महत्व को जाना था और उन्होंने भारत के संविधान में शिक्षा को आवश्यक किया था। अंबेडकरवाद में शिक्षा एक महत्वपूर्ण घटक है। विश्वविद्यालय के हबीब तनवीर सभागार में आयोजित विशेष व्याख्यान की अध्यक्षता कुलपति विभूति नारायण राय ने की। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अतिथि लेखक कवि आलोक धन्वा और डॉ. अंबेडकर अध्ययन केन्द्र के कार्यकारी निदेशक डॉ. एम. एल. कासारे मंचस्थ थे। प्रो. तुलसीराम ने अंबेडकरवाद विषय की विस्तार से व्याख्या करते हुए कहा कि अंबेडकरवाद के तीन महत्वपूर्ण घटक है। डॉ. अंबेडकर के जीवन में आए अनुभव, महात्मा फुले के सुधार आंदोलन और बुध्दिस्ट फिलासफी अंबेडकरवाद का आधार है। गांधी जी और अंबेडकर के सामाजिक आंदोलनों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि 1920 से 1930 तक दोनों में मनमुटाव दिखाई देता है परंतु 1930 के बाद दोनों की विचारधाराओं में परिवर्तन आया। उन्होंने याद दिलाया कि एक मुलाकात में डॉ. अंबेडकर ने गांधी जी से कहा था कि सामाजिक आंदोलनों का राजनीतिक आंदोलनों पर वर्चस्व होना चाहिए। प्रो. तुलसीराम ने डॉ. अंबेडकर की विदेश नीति, अर्थनीति, हिंदु कोड बिल एवं संविधान के निर्माता के रूप में किये गये कार्यों पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने अंबेडकर के सामाजिक सुधार के विचारों का जिक्र करते हुए बताया कि डॉ. अंबेडकर ने 1913 में कोलंबिया विश्वविद्यालय में एक सेमिनार में 'भारत में जातिव्यवस्था सदियों से क्यों कायम रही' इसका विश्लेषण किया था और जातिव्यवस्था का उन्मूलन करने के लिए इंटर कास्ट मैरेज का समर्थन किया था। दामोदर घाटी जैसी योजना बनाने वाले अंबेडकर ने देश के विकास के लिए सिंचाई पर अधिक बल दिया था और सबसे सस्ती बिजली पैदा करने का आग्रह किया था। प्रो. तुलसीराम ने कहा कि अंबेडकर पर प्राचीन तथा आधुनिक युग के समाज सुधारकों का प्रभाव था इसलिए उन्होंने बुध्द, कबीर और महात्मा ज्योतिबा फुले जैसे समाज सुधारकों की नीतियों को आगे बढाया। कवि आलोक धन्वा ने अपने उदबोधन में कहा कि डॉ. अंबेडकर शोषण विरोधी चिंतक थे। अंबेडकर के समूचे जीवन दर्शन को जानने और समझने के लिए व्यापक दृष्टि चाहिए। उन्होंने बीसवीं सदी को मानवी उत्कर्ष की सदी की संज्ञा दी। इस अवसर पर डॉ. एम. एल. कासारे

ने कहा कि डॉ. अंबेडकर ने अपने जीवनकाल में अनेक विषयों का अध्ययन किया और उनपर लिखा। उन्होंने बताया कि महाराष्ट्र सरकार द्वारा प्रकाशित 22 खंडों में डॉ. अंबेडकर के समग्र जीवन और कार्यों का परिचय सुलभ कराया है। डॉ. अंबेडकर ने संविधान के माध्यम से भारत के भविष्य की नींव डाली है। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अंबेडकर अध्ययन केंद्र रिसर्च असोसिएट ज्योतिष पायें ने किया। इस अवसर पर डॉ. संतोष भदौरिया, डॉ. कृपाशंकर चौबे, डॉ. रामानुज अस्थाना, डॉ. प्रीति सागर, डॉ. उमेश कुमार सिंह, डॉ. शंभू गुप्त, डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी, असिस्टेंट प्रोफेसर शैलेश कदम मरजी, शरद जायसवाल, अमित राय, अमरेन्द्र कुमार शर्मा, अवंतिका शुक्ला, राकेश मिश्र, रवि शंकर सिंह, अखिलेश दीक्षित, सिध्दार्थ शंकर त्रिपाठी सहित शोधार्थी एवं छात्र बडी संख्या में उपस्थित थे। बी. एस. मिरगे, जनसंपर्क अधिकारी

पोष्ट - मानस मंदिर, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत
Post- Manas Mandir, Gandhi Hills, Wardha-442001 (Maharashtra), INDIA
Ph./Fax: (07152) 252651 ई-मेल/**E-mail: bsmirgae@gmail.com**, वेबसाईट/**Website:** www.hindivishwa.org